

आत्म साधना का पर्व पर्युषण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आत्मा की साधना करना, आत्मा को जानना, आत्मा के अस्तित्व का पता करना आत्म साधना है। आत्मा चेतनायुक्त है। यह सुख—दुख का अनुभव करता है। गीता में कहा गया है कि मनुष्य जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है। आत्मा भी पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। आयुष्य कर्म को पूर्ण करके आत्मा नवीन शरीर धारण करता है। आत्म साधना का धेय है पुद्गलों से आत्मा का पृथक होना। पर्युषण पर्व जैन साधना का एक महत्वपूर्ण पर्व है। इस पर्व में आत्मा को जानने का प्रयास किया जाता है। पर्युषण पर्व एक ऐसा पर्व है जिसमें आत्मा के साथ रहा जाता है। भारत विभिन्नताओं का देश है। सभी लोग अपनी—अपनी परम्पराओं के साथ धर्म करने के लिए स्वतंत्र हैं। पर्युषण पर्व में आगमों का अध्ययन किया जाता है। आत्मा में रहना पर्युषण का शाब्दिक अर्थ है। अष्ट दिवसीय इस पर्व में आठ कर्मों के त्याग की व्यवस्था है। कर्मरज से मुक्त होकर आत्मा परमात्मा में स्थिर हो जाता है। आत्मा को न तो देखा जा सकता है और न ही स्पर्श किया जा सकता है। आत्मा अनुभवजन्य है। हर प्राणी को आत्मानुभव होता है। कबीरदासजी ने कहा है कि जैसे गूंगा व्यक्ति गुड़ खाकर के उसके स्वाद को नहीं बतला पाता किन्तु स्वाद का अनुभव करता है उसी प्रकार आत्मा भी है। आत्मा का अनुभव सभी को होता है किन्तु उसे कोई बता नहीं सकता। पर्युषण के आठ दिनों में साधक भौतिकता को त्यागकर आत्मा की साधना करता है। पर्युषण पर्व में तपस्या, स्वाध्याय, ध्यान आदि आत्मशोधक प्रवृत्तियों की आराधना की जाती है। इसका अंतिम दिन संवत्सरी कहलाता है। वर्षभर की भूलों के लिए क्षमा लेना और क्षमा देना इसकी विशेषता है। यह पर्व मैत्री और उज्ज्वलता का संदेशवाहक है। पर्युषण पर्व में प्रायश्चित्त के द्वारा किए गए दोषों का निराकरण किया जाता है। राग—द्वेष का क्षय भी प्रायश्चित्त के द्वारा हो जाता है। स्वाध्याय के द्वारा आत्मा का शुद्धिकरण होता है। तप के द्वारा आन्तरिक और बाह्य शुचिता आती है।

तप मानव जीवन का श्रृंगार है। चारित्र भी जीवन का श्रृंगार है। मानव जीवन का श्रृंगार आभूषण नहीं है। आभूषण केवल बाहरी चमक-दमक है। यह बाहरी श्रृंगार है। जीवन को उत्कर्ष पर पहुंचाने वाला आभ्यन्तर श्रृंगार है। सादा जीवन उच्च विचार मानव जीवन का श्रृंगार यह कहावत तप को ही ध्यान में रखकर कही गयी है। तपस्या को साधना का अपरिहार्य अंग माना गया है। तपस्या का अर्थ काय-क्लेश या उपवास ही नहीं है, बल्कि स्वाध्याय, ध्यान, विनय आदि सब तपस्या के विभाग हैं। तपस्या मोक्ष का मार्ग है, उससे तपस्वी मोक्ष की ओर गति करता है। प्रत्येक संसारी जीव प्रतिक्षण कुछ न कुछ प्रवृत्ति सदैव करता है। जब उसकी प्रवृत्ति रुक जाती है तब वह मुक्त हो जाता है। जहां प्रवृत्ति है, वहां कर्म पुद्गलों का आकर्षण और निर्जरण होता है। प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है— शुभ और अशुभ। शुभ प्रवृत्ति से अशुभ कर्मों का निर्जरण और शुभकर्म का बन्ध होता है। अशुभ प्रवृत्ति से अशुभ कर्मों का बन्ध होता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप से संयम होता है तथा इसका समागम होने पर जीव को मोक्ष मिलता है। आत्मा ज्ञान से जीवादि भावों को जानता है, दर्शन से उसका श्रद्धान करता है, चारित्र से कर्मास्रव का निरोध करता है और तप से विशुद्ध होता है। सर्व दुःखों से मुक्त होने के लिए तपस्वी संयम और तप से पूर्वकर्मों का क्षय करके मुक्ति प्राप्त करते हैं। तप कर्मों की निर्जरा और आत्मविशुद्धि का सर्वोत्कृष्ट साधन है। जो ज्ञानावरणादि आठ प्रकार की कर्म ग्रन्थि को तपाता है, जलाता है, नाश करता है, वह तप है। वासना या इच्छा का निरोध करना भी तप कहलाता है। बाह्य या आभ्यन्तर जितने भी तप हैं उनका आचरण इह लौकिक तथा पारलौकिक नामना, कामना या वासना से रहित होकर केवल निर्जरा की दृष्टि से करना ही धर्म है। जैसे अग्नि हवा के द्वारा तृण और काष्ठादि को जलाती है वैसे ही ज्ञानरूपी हवा से युक्त शील, समाधि और संयम से प्रज्वलित तप रूपी अग्नि संसार रूपी बीज को जलाती है। तपस्या को आत्मशुद्धि का साधन और कर्मों की निर्जरा का हेतु बताया गया है। मुक्ति व शान्ति प्राप्त करने में तप की महती भूमिका होती है। तप के मुख्य दो भेद हैं— बाह्य और आभ्यन्तर। बाह्य तप अध्ययन आदि कारणों से बाह्य तप कहलाता है। इसमें बाहरी द्रव्यों की अपेक्षा होती है, अशन, पान आदि द्रव्यों का त्याग होता है। ये सर्वसाधारण के द्वारा तपस्या के रूप में स्वीकृत होते हैं। इनका प्रत्यक्ष प्रभाव शरीर पर

अधिक होता है। ये मुक्ति के बहिरंग कारण होते हैं। बाह्य तप के द्वारा मानव अपने तन और मन को सहिष्णु बना लेता है। बाह्यतप से सुख शीलता छूट जाती है क्योंकि सुखशीलता राग को उत्पन्न करती है। राग—राग को बढ़ाता है और कर्मबन्ध के कारण दोषों को लाता है। उसको छोड़ने का उपाय है शरीर को कृश करना। इसलिये बाह्य तप किया जाता है। अनशन, अवमौदर्य, भिक्षाचर्या या वृत्ति संक्षेप, रस—परित्याग, काय क्लेश, प्रतिसंलीनता अथवा विविक्त शयनासन बाह्य तप हैं। आभ्यन्तर तप के छह भेद हैं— प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और उत्सर्ग। इस प्रकार पर्युषण पर्व में साधना के द्वारा आत्मा को निर्मल किया जाता है।